भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 1268
उत्तर देने की तारीख 28.07.2025

ओडिशा की स्वदेशी कला का संवर्धन

1268. श्रीमती संगीता कुमारी सिंह देव :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने ओडिशा की किसी स्वदेशी कला जैसे पट्टचित्र, पिपिली एप्लिक वर्क, तारकाशी सिल्वर फिलिग्री या ढोकरा धातु ढलाई को यूनेस्को या राष्ट्रीय अमूर्त विरासत सूची के अंतर्गत मान्यता दी है;
(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और पिछले पाँच वर्षों और चालू वर्ष के दौरान ओडिशा के इन पारंपरिक शिल्पों के संरक्षण, प्रशिक्षण और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के लिए सरकार द्वारा कितना वित्तपोषण या अनुदान दिया गया है;
(ग) ओडिशा में, विशेष रूप से कटक, पिपिली और संबलपुर सहित विरासत शिल्प में शामिल सांस्कृतिक समूहों और कारीगर परिवारों का जिलावार ब्यौरा क्या है; और
(घ) क्या सरकार के पास ओडिशा की अनूठी मंदिर डिजाइन विरासत के अनुसंधान, प्रदर्शनियों और दस्तावेज़ीकरण को बढ़ावा देने के लिए 'कलिंग कला और वास्तुकला के लिए राष्ट्रीय केंद्र' स्थापित करने का कोई प्रस्ताव है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (घ): संस्कृति मंत्रालय द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) से संबंधित नामोद्दिष्ट नोडल एजेंसी, संगीत नाटक अकादेमी (एसएनए) के माध्यम से यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी प्रतिनिधि सूची में संबंधित घटकों के समावेशन/नामांकन के लिए समुदायों और हितधारकों से प्राप्त प्रस्तावों की जांच की जाती है।

यथानिर्धारित प्रक्रिया के अनुसार, राष्ट्र पक्ष को यूनेस्को की अंतर-सरकारी समिति द्वारा मूल्यांकन हेतु संबंधित आईसीएच घटक का विस्तृत नामांकन डोजियर प्रस्तुत करना होता है।

वर्तमान में, मंत्रालय के विचारार्थ ऐसा कोई भी प्रस्ताव लम्बित नहीं है।